MAA OMWATI DEGREECOLLEGE,

HASSANPUR (PALWAL)

NOTES

M.A(History) 2nd Semester,

Ancient Socienties(Paper-1)

M.A (History) 2-Semester PAPER-I
Important questions (Ancient societies)

Unit-1

Q→1 महापाषाणिक संस्कृति से आपका क्या अभिप्राय है। वर्णन करें।

Ans:- महापाषाणीय संस्कृति का उद्भव 1000 ई.पू. के आसपास दक्षिण भारत में हुआ यह संस्कृति शवधान दक्षिण भारत में कई शताब्दियों तक अस्तित्व में रही। दक्षिण भारत के विभिन्न स्थानों से महापाषाणि शवधान (मेगालिथस) प्राप्त हुए हैं। इस संस्कृति के लोग अपने मृतकों को समाधियों में गाड़ते थे तथा उनकी सुरक्षा के लिए बड़े-बड़े पाषाणों का प्रयोग करते थे।

इस कारण इन्हें वृहत्पाषाण अथवा महापाषाण का कहा गया। इन शवधानों की खुदाइयों में लोहे के औजार, हथियार तथा उपकरण काफी प्रचुरता से

मिलते हैं

महापाषाण संस्कृति का काल निर्धारण :- महापाषाणीय संस्कृति का उदय 1000 ई. पू. के आसपास दक्षिण भारत में हुआ। यह संस्कृति दक्षिण भारत में कई शताब्दियों तक अस्तित्व में रही माना जाता है कि दक्षिण भारत में लौह युग आरम्भ होने के साथ ही महापाषाणीय शवधानों के निर्माण की परम्परा आरम्भ हुई

महापाषाण संस्कृति के प्रमुख क्षेत्र :-

इस तरह के शवधान महाराष्ट्र में नागपुर के पास, कर्नाटक में मास्की व आंध्रप्रदेश में नागार्जुन कोंडा तथा तमिलनाडु में आदिचनल्लूर तथा केरल में पाए गए हैं

उत्तरी गुजरात के दानपुर में एक महापाषाणीक रचना मिली है। जो एक प्राचीन चैत्य भी हो सकती है। 19वीं सदी में महम के करांची जिले के कलक्टर कैप्टेन प्रीडी ने कहा था कि सम्पूर्ण पर्वतीय जिले में बड़ी संख्या में प्रस्तर की कब्रे मौजूद है जो हमारी पश्चिमी सीमा तक जाई है।

महापाषाणकालीन शवाधानों का निर्माण :-

महापाषाणीय शवाधानों के निर्माण के कई तरीके देखने में आते हैं कभी - कभी मृतकों की हड्डियां बड़े कलशों में जमा करके गड्डो में गाड़ी जाती थी।

Page :
Date :

(1) संगोरावृत्त —
इस प्रकार के शवाधान अनेक गोलाकार पत्थरों को सम्मिलित कर बनाए गए हैं। इन संगोरा वृत्तों को देखकर लगता है कि उस समय शव को लोहे के औजार, मृत्तिका पात्र या कलश और पालतू जानवरों की अस्थियों के साथ दफना दिया जाता था।

(2) ताबूत —
यह भी अंत्येष्टि की एक विधि है इसमें पहले शव को दफनाकर चारों ओर से छोटे - छोटे पत्थरों के खम्भों से घेर दिया जाता था।

Page :
Date :

(3) मनहिर :—
इस प्रकार के शवाधानों में शव को गाड़कर उसके ऊपर एक - सा स्तम्भाकार स्मारक पत्थर लगा दिया जाता था।

(4) महापाषाण तुम्ब :—
इस प्रकार के शवाधानों के निर्माण में सर्वप्रथम पत्थर की पेटियों से घिरे हुए चबूतरे जैसे स्थान पर शव एक सिल्ली पर रखा जाता था।

(5) अन्य समाधियाँ :—
उपरोक्त चार प्रकार की समाधियों के अतिरिक्त कुछ अन्य प्रकार के शवाधान भी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पाए गये हैं।

Scanned with OKEN Scanner

Page
Date

शवाधानों से प्राप्त सामग्री :-

कुछ विशेष प्रकार के बर्तन भी पाए गए हैं इन शवधानों प्राप्त 'पायों' वाले प्याले ठीक वैसे ही हैं जैसाकि उन दिनों की तथा उनसे भी पुराने भारत के उत्तर - पश्चिमी क्षेत्र तथा ईरान की कब्रों से मिले हैं।

Unit-2

Page
Date

Ques:-2 यूनानी सभ्यता में नगर - राज्यों की स्थापना की विवेचना कीजिए। यूनानी सभ्यता में उपनिवेशों की स्थापना के कारणों का भी उल्लेख कीजिए

Ans:- **नगर-राज्य की स्थापना :-**

प्रारम्भ में यूनानी लोग कृषि का कार्य बहुत कम किया करते थे इसकी अपेक्षा वे पशुपालन पर अधिक जोर दिया करते थे परन्तु बाद में जिन मैदानों पर ये लोग पशुपालन करते थे उन्हीं में आबाद होकर कृषि द्वारा वे अन्न उगाने लगे। इसी से प्रत्येक नगर - राज्य के निवासियों में आत्म गौरव स्वाभिमान और राज्य भक्ति की भावना भी रहती थी।

Scanned with OKEN Scanner

स्पार्टा का नगर-राज्य :-

यूनानी के पेलोपोनेसस प्रायद्वीप के दक्षिणी क्षेत्र की पहाड़ियों के बीच स्पार्टा का नगर-राज्य स्थित था। यहां के निवासी डोरियन जाति के थे स्पार्टा के चारों और दूसरी जातियां रहती थी। स्पार्टा मूलतः एक सैनिक राज्य था अतः वहां शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों में अनुशासन पैदा करना तथा उनका शारीरिक विकास करना था। उनके बौद्धिक विकास की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता था उन्हें कुशल योद्धा बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता था।

एथेन्स का नगर-राज्य :-

एथेन्स का नगर एक्रोपोलिस नामक दुर्ग के चारों और बसा था इसका संगठन स्पार्टा के ठीक विपरीत ढंग का था स्पार्टा में राजतंत्र था, लेकिन एथेन्स में गणतांत्रिक शासन पद्धति विकसित हुई थी एथेन्स के लोग शांतिप्रिय थे और युद्ध के उन्माद से दूर रहते थे एथेंस निवासी आयोनियन जाति के थे यदि स्पार्टा एक विस्तृत सैनिक शिविर था तो एथेन्स मनीषियों और विचारकों का महान शिक्षालय था स्पार्टा की जमीन पर सीमित थी तो एथेन्स की शक्ति समुद्र पर थी।

कुछ समय बाद क्लाइस्थनीज ने एथेन्स के समाज का राजनीतिक स्वरूप एकदम बदल डाला उसने राज्य को विभिन्न क्षेत्रों में बांट दिया, जिसके प्रतिनिधि कौंसिल के सदस्य होते थे इस प्रकार कुल का महत्व गौण हो गया था। जिस थेमिस्टोक्लीज ने ईरानियों के विरुद्ध युद्ध में एथेन्स का नेतृत्व किया था बाद में उसे भी देश निकाला हुआ उसे ईरान में ही शरण लेनी पड़ी।

Unit-2

Q3. एथेनियन प्रजातन्त्र का उनके सामाजिक और धार्मिक विश्वास तन्त्र पर प्रभाव का विश्लेषण कीजिए।

Ans:- एथेंस का संगठन स्पार्टा के ठीक विपरीत था। स्पार्टा में जहां राजतन्त्र प्रणाली का प्रचलन था। वहीं इस नगर राज्य में गणतन्त्र शासन प्रणाली का विकास हुआ था एथेंस के लोग शांतिप्रिय थे तथा वे युद्धों से प्रायः दूर ही रहते थे एथेंस के प्रजातन्त्र तथा वहां के समाज के विविध पहलुओं को इस प्रकार से समझा जा सकता है।

(i) एथेन्स का अभ्युदय :—

यूनान के नगरों में एथेन्स ने सर्वाधिक प्रसिद्धि प्राप्त की इस नगर के निवासी एथेनियन्स की अपेक्षा

एटिकन नाम से अधिक प्रचलित थे। एथेंस नगर यूनान के एटिकन प्रदेश की राजधानी थी।

एथेन्स के प्रजातंत्र की विशेषताएं :—

एथेन्स का नगर एक्रोपोलिस नामक दुर्ग के चारों ओर बसा था। लेकिन एथेन्स में गणतान्त्रिक शासन-पद्धति विकसित हुई थी। एथेन्स के लोग शान्तिप्रिय थे और युद्ध के उन्माद से दूर रहते हैं। एथेन्स निवासी आयोनियन जाति के थे। छठी सदी ई०पू० तक वहां वंश-परम्परा के आधार पर सरदारों की प्रधानता रही शासकों की मनमानी रोकने के लिए ड्रेको (621 ई०पू०) ने कानूनों को लिखित रूप दिया उसने खेतों की नीलामी बन्द की। इस कारण समाज में व्यापारियों का महत्व बढ़ गया। उसने राज्य को विभिन्न क्षेत्रों में बाँट दिया। इस प्रकार कुल का महत्व गौण हो गया।

एथेन्स की आबादी तीन भागों में बंटी थी — नागरिक, विदेशी और दास ही शरीर श्रम के सारे कार्य करते थे। एथेन्स में शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण था। वहां विद्यार्थी को चरित्रवान तथा देशभक्त नागरिक बनाने पर बल दिया जाता था। उन्हें गणित, ज्योतिष, विज्ञान, राजनीति, संगीत, खेलकूद आदि विषयों की शिक्षा दी जाती है। वहां गुलाम लोग भी शिक्षक का काम करते थे।

(iii)

एथेन्स का साम्राज्य विस्तार

क्लाइस्थनीज के सुधारों के फलस्वरूप एथेन्स की ख्याति और शक्ति दोनों की ही वृद्धि हुई। ईरान के शासन को एथेन्स की समृद्धि से कुछ खतरे की आशंका हुई। 490 ई०पू० में ईरान के शासक ने यूनान पर आक्रमण कर दिया। यह युद्ध 43 वर्ष तक चलता रहा। इस युद्ध में एथेन्स ने निर्णायक भूमिका अदा की तथा इसका नेतृत्व किया। एथेन्स के नेतृत्व में यूनान में न केवल जनतंत्र का विकास हुआ बल्कि एथेन्स यूनानी सभ्यता का एक प्रमुख केन्द्र बन गया।

(iv) पेरिक्लीज का युग

461 ई॰पू॰ के लगभग एथेन्स की राजसत्ता पेरिक्लीज नामक एक व्यक्ति के हाथों में आई। इसी कारण उसके काल को यूनानी इतिहास का स्वर्ण-युग कहा जाता है। उसे के समान जनतंत्र का समर्थक था। वह एथेन्स का ऐसा सांस्कृतिक विकास देखना चाहता था। इस उन्नति पर व्यक्तित्व का ऐसा प्रभाव था कि इस काल को पेरिक्लीज-युग के नाम से पुकारा जाता है। संस्कृति के क्षेत्र में भी एथेन्स ने खूब प्रगति की। इस पर भी हम आगे विस्तृत चर्चा

पेलोपोनीशियन युद्ध

ईरान-यूनानी युद्ध के बाद एथेन्स और स्पार्टा में पारस्परिक द्वेष भाव बहुत बढ़ गया। इस कारण युद्ध के बाद समूचे यूनान पर उसका प्रभुत्व जम गया। इस कारण भिन्न-भिन्न नगर राज्यों का असन्तोष बढ़ने लगा। स्पार्टा भी एथेन्स की उन्नति से ईर्ष्या करता था। जिसको पेलोपोनीशियन युद्ध कहते हैं। इस युद्ध में सम्पूर्ण यूनान सम्मिलित था। अन्त में एथेन्स पराजित हो गया।

मैसिडोनिया का उत्कर्ष

ऐसे समय में यूनान में यूनान में एक दूसरे नगर राज्य मैसिडोनिया का उत्कर्ष हुआ। उसने समूचे यूनान को जीतकर विशाल मैसिडोनिया साम्राज्य की स्थापना की। 336 ई॰पू॰ में मैसिडोनिया का राजा बना। वह बहुत ही पौरुषी राजा था जो समस्त विश्व का सम्राट बनने का स्वपन देखा करता था। यूनान को अपने अधीन कर लेने के बाद वह विश्व विजय का लिए निकला। 326 ई॰पू॰ में झेलम नदी के तट पर उसने राजा पोरस को हराया। यहीं से वह वापस लौट पड़ा किन्तु रास्ते में ही बेबीलोन में 326 ई॰पू॰ में उसकी मृत्यु हो गई। उसने दूर-दूर के देशों तक प्रचार किया। सिकन्दर की मृत्यु के बाद उसके सेनापतियों ने ही साम्राज्य को आपस में बाँट लिया। बाद में यूनान पर रोमनों का आधिपत्य हो गया।

Scanned with OKEN Scanner

Page
Date

Que-4- होमरकालीन सभ्यता की संक्षेप मे विवेचना कीजिए?

Ans:- यूनानी सभ्यता संसार की सभ्यताओ में अपना अलग स्थान रखती है। अध्ययन की सुविधा को लिए यूनान के प्राचीन इतिहास को 3 कालो में बाँटा जा सकता है (1) होमर युग (2) क्लासिकल युग (3) पेरीक्लिज युग

(i) राजनीतिक व्यवस्था – इलियड और ओडसी नामक महाकाव्यो में यूनान की राजनीतिक व्यवस्था पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

(1) राजा – सम्राट शासन का सर्वोच्च पदाधिकारी होता था। न्याय का वह मूल स्रोत था। राजा को किसी व्यक्ति पर अत्याचार करने का अधिकार नही था। होमर युग रक्तपात से परिपूर्ण था। युद्ध के अवसर पर सम्राट स्वंय ही इस सेना का नेतृत्व करता था। होमर काल मे सम्राट को सर्वोच्च पुरोहित भी माना जाता था।

Page
Date

(2) अन्य सभाएं – वीरगाथा काल में समाज की ईकाई परिवार थी। शासन के कार्यो मे सम्राट को परामर्श देने के लिए इनकी सभाए होती थी (1) ब्यूल (2) एगोरा एगोरा स्वतंत्र नागरिको की सभा थी और ब्यूल में केवल सामन्तो का ही स्थान रहता था। इसी सम्बन्ध में बर्न्स का मत है – होमर काल में ग्रीक लोगो की संस्थाए अत्यन्त आरम्भिक सभी छोटी-छोटी जातियो बाह्य नियन्त्रण से स्वतंत्र थी।

(ii) सामाजिक व्यवस्था

(1) परिवार – परिवार ही समाज की इकाई थी। अनेक परिवार एक ही समूह में रहते थे। प्रत्येक सदस्य को अपने पिता की आज्ञा माननी पडती थी। किसी पिता ने अपने परिवार के अन्य सदस्यो पर कोई अत्याचार किया हो। परिवार में पिता का महत्वपूर्ण स्थान था।

Scanned with OKEN Scanner

2- स्त्रियों की दशा
- होमरकालीन समाज में स्त्रियों की दशा अच्छी थी। उसका मुख्य कार्य बच्चों का पालन पोषण करना ही था। गृह लक्ष्मी के रूप में तो उनका आदर था ही साथ ही वे सार्वजनिक कार्यों में भी भाग लेती थी।

3- विवाह प्रथा
- होमरकालीन समाज में विवाह स्वयं स्त्री-पुरुष द्वारा तय न किया जाकर युवतियों के पिता और होने वाले दामाद द्वारा तय किया जाता था। इस युग के बड़े-बड़े संघर्ष स्त्रियों के कारण ही हुए थे।

4. आभूषण
- होमरकालीन समाज में आभूषण धारण करने की प्रथा प्रचलित थी। स्त्री एवं पुरुष दोनों ही आभूषण के शौकीन थे। होमरकालीन चित्रों में स्त्रियों एवं पुरुषों को आभूषण धारण किए हुए चित्रित किया गया है।

5- रहन-सहन
- वे जांघिया पर लंगोट का प्रयोग करते थे। पुरुष बड़े-बड़े बाल और दाढ़ी-मूँछ रखते थे। स्त्रियों के समान ही आभूषण रखते थे।

6- खान-पान
- निर्धन व्यक्ति तांबे व गर्म पत्थर पर तैयार किए हुए मछली व सब्जियां आदि खाते थे। धनिक वर्ग शहद, वसा तथा मांसाहार भोजन करते थे।

7. वर्ग व्यवस्था का रूप
- होमरकालीन समाज में वर्ग-व्यवस्था प्रचलित थी। साधारणतः समाज अभिजात, मध्य और निम्न श्रेणी में विभाजित किया गया था। अभिजात वर्ग के लोग निम्न वर्ग के लोगों की नियुक्तियां तो करते थे परन्तु जरूरत पड़ने पर अपना कार्य करने के लिए स्वयं भी तैयार रहते थे।

(iii) आर्थिक दशा

:- होमर युगीन समाज का आर्थिक जीवन कृषि पर ही निर्भर था। उस समय गृहस्वामी अपनी आवश्यकतानुसार वस्त्रो तथा कृषि यन्त्रो का भी निर्माण स्वयं कर लेते थे और आवश्यकता पड़ने पर आपस मे एक-दूसरे की वस्तुओ का आदान-प्रदान कर लेते थे।

(iv) दर्शन एवं धर्म

:- यूनान के निवासियो का यह विश्वास था कि यदि देवताओं की आराधना की जाये, तो वे प्रसन्न होकर मनुष्य को सुख और शान्ति प्रदान करेगे।

(v) साहित्य और कला

:- सत्य तो ये है कि होमर काल में यूनान की कोई विशेष सांस्कृतिक उन्नति नही हुई। इस युग की सभ्यता। यूनान की आरम्भिक सभ्यता के नाम से पुकारी जाती है। इस बात की आशा नही की जा सकती थी कि इस युग में यूनान ने वैसी ही उन्नति की होगी कि उसके आगे आने वाले कालो मे हुई।

Unit-3

Que-5:- रोमनकालीन दासो की दशा की विवेचना कीजिए ?

Ans:- अरस्तु के दासता सम्बन्धी विचार उसकी रूढ़िवादिता का प्रमाण है। उत्पादन के लिए उनके अधीन श्रमिको का एक बड़ा दल जी-तोड़कर परिश्रम करता था। यूनानी संस्कृति के भव्य प्रसादो की नींव मे दासो के श्रम का महत्वपूर्ण भाग था। एक यथार्थवादी तथा व्यावहारिक विचारक के नाते वह केवल भावनाओ के तीव्र स्वर से घबड़ाकर राष्ट्र का उत्पादन कम करने और जटिलता बढ़ाने के पक्ष मे न था। मानव मात्र यह शाश्वत नियम है कि विजित राज्यो के निवासियो की देह तथा सम्पदा पर विजेताओं का अधिकार होता है। अरस्तु दास को एक पारिवारिक सम्पत्ति है। उसकी दृष्टि में परिवार के लिए आवश्यक है। दास सम्पत्ति का सजीव उपकरण है जिस प्रकार कुछ उपकरण अन्य उपकरणो से बड़े होते है उसी प्रकार दास, जो सजीव उपकरण है निर्जीव उपकरण की तुलना में अग्रणी है निर्जीव उपकरणो से सभी काम लिया जा सकता है।

Page :
Date :

(I) दास-प्रथा के आधार

(i) दास-प्रथा एक स्वाभाविक व्यवस्था - अरस्तु के मतानुसार दास प्रथा प्राकृतिक है कुछ व्यक्ति प्रकृति से दास होते हैं और दूसरे व्यक्ति स्वतन्त्र होते हैं आज्ञा देने वाला स्वामी तो आज्ञा पाने वाले दास होते हैं प्राकृतिक स्वतन्त्र पुरुष और दास के शरीरों में भेद करती चाहती थी। वह शारीरिक श्रम के लिए बेकार होता था।

(2) दास-प्रथा दोनों पक्षों को लाभकारी - दास प्रथा को इस दृष्टि से भी न्यायोचित ठहराता है कि यह न केवल स्वामी के लिए अपितु दास के लिए भी उपयोगी है। स्वामी के साथ-साथ दास के दृष्टिकोण से भी यह प्रथा उतनी ही उपयोगी है। इस प्रसंग में अरस्तु पालतू जानवर का दृष्टान्त प्रस्तुत करता है उसका प्रेरणा और मार्गदर्शन पाता रहे। दास के बिना स्वामी और दास असहाय रहेंगे।

Page :
Date :

(3) अरस्तु नैतिक दृष्टि से भी दास-प्रथा को आवश्यक मानता है - यह मत है कि स्वामी तथा दासों के नैतिक स्तर में पर्याप्त मात्रा में भेद होता है। प्रकृति से दास में संयम के सच्चे गुण का अस्तित्व कभी नहीं हो सकता। एक संयमी स्वामी के अधीन रह कर उसके आदेशों का पालन करते हुए एक प्रकार का संयम अवश्य प्रदान कर सकता

(ii) दासता के प्रकार - 1 स्वाभाविक दासता
(2) वैधानिक दासता
जो व्यक्ति जन्म से ही अकुशल होते हैं वे स्वाभाविक दास होते हैं। एक राज्य द्वारा किसी अन्य राज्य को पराजित कर वहाँ से लाये हुए बन्दी लोग भी दास बनाए जा सकते हैं।

(iii) दास प्रथा के बारे में अरस्तु की मानवीय व्यवस्था - दास प्रथा का पक्ष-पोषक होने पर भी अरस्तु इस सम्बन्ध में कुछ ऐसी मानवीय व्यवस्थाएं प्रस्तुत करता है।

Scanned with OKEN Scanner

(i) अरस्तु की पहली व्यवस्था यह है कि स्वामी और दास दोनो पर ही अरस्तु इस सम्बन्ध में हित समान है और दास-प्रथा का उद्देश्य दोनो का ही हित साधन करता है दास और स्वामी के सम्बन्ध को माधुर्यपूर्ण और सहयोगियो के रूप मे देखना चाहता है।

(ii) अरस्तु दासो की संख्या को बढाने के पक्ष मे नही है।

(iii) अरस्तु दासो की संख्या को बढाने अरस्तु की तीसरी व्यवस्था उसकी यह धारणा है कि दासता प्राकृतिक गुणो के कारण उसका कोई कानुनी पक्ष नही है।

(iv) अरस्तु का मत है कि समस्त दासो को अपने सम्मुख स्वतन्त्रता-प्राप्ति का ध्येय ही अंतिम में रखना चाहिए।

(iv) अरस्तु की दास-प्रथा की धारणा की आलोचना

(1) अरस्तु की दासता की परिभाषा के अनुसार कुछ व्यक्ति आज्ञा देने के लिए कुछ आज्ञा मानने के लिए पैदा होते है।

(2) दास प्रथा प्राकृतिक नही है। मनुष्य मे विभिन्नता तथा बुद्धि की कुशाग्रता में अन्तर होते हुए भी एक प्राकृतिक समानता होती है दास प्रथा के वर्णन को देख कर मैक्सी ने ठीक ही कहा है कि इस पुस्तक को भी अवैध घोषित कर दिया जाना चाहिए।

(3) अरस्तु के मत में दास वर्ग को शारीरिक शक्ति अधिक प्राप्त होती है।

(v) रोम मे दास प्रथा

- इस काल मे रोम में नागरिको से ज्यादा संख्या दासो की थी। इसीलिए कालांतर मे वे अपनी करने मे भी असमर्थ हो गए।

(i) दास प्रथा के विषय मे इतिहासकारो के विचार

- मानव समाज मे दास प्रथा की शुरुआत कब से हुई, दासता मनुष्यो के पापो का दण्ड है यह इस जन्म या पूर्व जन्म के पापो का प्रतिफल मात्र है, जिसे प्रत्येक को भुगतना होगा।

Page :
Date :

Que-6 रोमन साम्राज्य के पतन के मुख्य कारण क्या थे ?

Ans- रोमन साम्राज्य के पतन के कारण :- रोमन नगर की स्थापना 753 ई० पू० मे हुई तथा नुमा जुलियस सीजर तथा ऑगस्टस जैसे शासको ने रोमन साम्राज्य को विशालता प्रदान की, परन्तु जल्द ही उसी साम्राज्य का पतन हो गया।

(1) साम्राज्य की विशालता :- इतना विशाल साम्राज्य तो सिकन्दर तथा भारतीय नेपोलियन समुद्रगुप्त भी स्थापित नही कर सकते यही कारण था कि जब तक जुलियस सीजर, ऑगस्टस और मारकस ऑरियस जैसे योग्य शासक जीवित रहे तब तक रोमन साम्राज्य प्रगति करता रहा।

(2) रोमन साम्राज्य का विभाजन :- सम्राट थिओडोसियस ने अपने शासन काल में रोमन साम्राज्य को पूर्वी रोमन तथा पश्चिमी रोम नामक दो भागो में विभाजित कर दिया।

Page :
Date :

3- जन विद्रोह :- लौहकालीन रोमन साम्राज्य में विभिन्न जातियो के लोग रहते थे। सम्राट टिबेरियन के समय इंग्लैण्ड तथा स्पेन के लोग ने विद्रोह किए। देश में सर्वत्र अशान्ति तथा अराजकता का वातारण पैदा हो गया।

4- सम्राटो का विलासी जीवन :- ऑगस्टस तथा मारकस ऑरियस जैसे शासको को अधिकतर रोमन सम्राट विलासी थे। वे प्रजा की भलाई की और ध्यान न देकर सुरा और सुन्दरी मे अपना समय व्यतीत करते थे। नीरो की पत्नी प्रतिदिन 500 गधियो का दूध स्नान करने को माँगती थी।

5- सामाजिक पतन :- समस्त रोमन समाज दो वर्गों - पैट्रीशियन तथा प्लीबियन में बटा हुआ था। रोमन समाज में भारी संख्या में दास भी निवास करते थे। उन्हे किसी भी तरह के सामाजिक अधिकार प्राप्त नही थे।

Scanned with OKEN Scanner

6. विदेशी जातियो के आक्रमण

:- रोमन साम्राज्य पर अनेक बर्बर जातियो ने आक्रमण कर दिए। हुणों ने रोम पर बार-बार आक्रमण किए। 410 ई० मे आलारिक ने नेतृत्व में गोथो तथा 455 ई० में हुणो ने एटिला के नेतृत्व में रोमन साम्राज्य पर आक्रमण कर दिया।

7 सेना में एकता का अभाव

:- रोमन साम्राज्य की सुरक्षा हेतु एक विशाल सेना का गठन किया गया था। जिसमे भिन्न-भिन्न जातियो धर्मो के लोग शामिल थे। ऐसी सेना में एकता का अभाव था।

8. शोचनीय आर्थिक अवस्था

:- विदेशो से आने वाले धन उच्चवर्ग के पास ही रह जाता था। रोमन के किसानो की दशा बहुत ही शोचनीय थी। उन्हे कर भी बहुत देना पडता था। अतः कृषि को प्रति उनकी रुचि लगातार कम होने लगी। समाज मे धनी वर्ग गरीबो का शोषण करता था। जिसके कारण धीरे-धीरे रोम का पतन हो गया।

9- रोम की साम्राज्यवादी नीति

:- रोमन साम्राज्य मे जितने भी शासक गद्दी पर बैठे, उन्होने साम्राज्यवादी नीति को अपनाया। रोमन साम्राज्य के समय शाही सेना पर पानी की तरह धन बरसाया गया। रोमन पर बर्बर जातियो के आक्रमण होने लगे।

10- परिवार नियन्त्रण

:- रोम की बढती हुई जनसंख्या को रोकने के लिए परिवार नियोजन प्रथा को अपनाया गया। इसके अतिरिक्त पारिवारिक सम्पन्नता के चक्कर में पडकर रोमनो ने अपने परिवार सीमित रखना शुरु कर दिया। जनसंख्या की कमी भी रोम के पतन का मुख्य कारण है।

(11) बेरोजगारी

:- विदेशो से पकड कर लाये गुलाम देश पर एक भार थे। ऑगस्टस के समय 20,000 लोग शाही लंगर में मुफ्त खाना खाते थे। मारकस के समय बेरोजगारो की संख्या 30 हजार तक पहुच गयी थी।

Scanned with OKEN Scanner

Page :
Date :

(12) विदेशी आक्रमण :- रोम आन्तरिक रूप से खोखला हो चुका था। किसी भी महान सभ्यता को बाहर से तब तक नहीं जीता जा सकता, जब तक कि वह आन्तरिक रूप से दुर्बल न हो जाए।

(13) गृहयुद्धों का प्रभाव :- 235 ई० से 285 ई० पू० तक के 26 सम्राटों ने अपनी शक्ति के बल पर रोमन साम्राज्य पर अधिकार कर लिया और इनमें से एक के अतिरिक्त बाकी सभी को मार दिया गया।

(14) ईसाई धर्म का प्रचार :- ईसाई धर्म का प्रचार भी रोमन साम्राज्य के पतन का कारण बना। जिस प्रकार मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए अशोक और बौद्ध धर्म उत्तरदायी थे। गिब्बन एवं मिल्से ने लिखा है ईसाई धर्म के प्रचार से रोम के निवासियों का राज्य, व्यक्तित्व व साहस नष्ट हो गया।

Page :
Date :

Que-7- वैदिक साहित्य पर एक निबन्ध लिखिए ?

Ans- परिचय :- सैंधव सभ्यता का जब पतन की ओर अग्रसर थी, उस दौरान भारत में आर्य जाति द्वारा वैदिक सभ्यता की नींव रखी गई। आर्यों का इतिहास हमें मुख्यतः वेदों से ज्ञात होती है जिनमें ऋग्वेद सबसे प्राचीन होने के कारण सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। वेद शब्द संस्कृत भाषा की विद् धातु से बना है। जिसका अर्थ ज्ञान होती है। इसलिए वेद शब्द संस्कृत भाषा की विद् धातु से बना है जिसका अर्थ ज्ञान होता है। इसलिए वेद ज्ञान का भण्डार है उसके पर्यायवाची है। वेद किसी व्यक्ति विशेष अथवा निश्चित काल में

नहीं लिखे गए।

(i) वैदिक साहित्य :-

वैदिक साहित्य में प्रतिबिंबित राजनीति, समाज, धर्म एवं आर्थिक प्रणाली से पहले वैदिक साहित्य को जानना जरूरी है। वैदिक साहित्य तात्पर्य उस विपुल साहित्य से है। जिसके अन्तर्गत चारों वेदों (ऋग, साम यजु एवं अथर्व) की संहिताएं, वेदों के ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक एवं उपनिषद्, सूत्र स्मृति तथा दर्शन व महाकाव्य आदि आते हैं। यद्यपि इनका मूल उद्देश्य धार्मिक था परन्तु यह आर्यों की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक

1. वेद :- वेदों को भारत का सबसे प्राचीन साहित्य माना जाता है। 'वेद' शब्द की उत्पत्ति विद् धातु से हुई जिसका अर्थ है जानना।

(i) ऋग्वेद :- ऋग्वेद चारों संहिताओं में सबसे प्राचीन है। इस वेद के मन्त्र अर्चन में प्रयुक्त होने के कारण ऋक् कहलाते हैं जिसका अभिप्राय ऋचा या मन्त्र है।

(2) यजुर्वेद :- यजु का अर्थ यज्ञ। इस वेद में अनेक प्रकार की यज्ञ विधियों का उल्लेख किया गया है।

Page :
Date :

(3) सामवेद :— साम का अर्थ होता है 'गाना', अतः यह ऐसा ग्रन्थ है। जिसके मन्त्र यज्ञों में देवताओं की स्तुति करते समय गाए जाते थे।

(4) अथर्ववेद :— इस वेद की रचना अथर्वा ऋषि ने की थी इसलिए इसे अथर्ववेद कहते हैं। इसमें कुल 40 अध्याय हैं। इसका वर्ण्य विषय अलग-अलग है इसकी दो शाखाएँ – शौनक और पिप्लाद।

Unit - 4th

Page :
Date :

Q.8. ई.पू. छठी शताब्दी बौद्धिक क्रांति और धार्मिक असंतोष की शताब्दी थी। आप इस विचार से कहाँ तक सहमत हैं।

Ans. परिचय :— छठी शताब्दी ई.पू. विश्व इतिहास में अपना विशेष महत्व रखती है। डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी के अनुसार ई.पू. की छठी शताब्दी मानव इतिहास में एक विशिष्ट युग था। इस काल में कई अनेक देशों में बौद्धिक और चिंतन के आंदोलन चले। इस समय तक आते-आते विश्व की प्राचीन सभ्यताओं व समाजों में रूढ़िवादिता, अंधविश्वास जटिल कर्मकांडों

एवं पुरोहित वर्ग के बढ़ते एकाधिकारों के कारण अनेक विकृतियाँ आ गई।

नवीन धार्मिक सुधार आंदोलनों के उदय के कारण :-

नवीन सुधार आंदोलन कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। वरन् यह चिरकाल से संचित हो रहे राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक असंतोष का ही परिणाम है।

(i) राजनीतिक दशा :- छठी शताब्दी ई. पू. में मगध में एक विशाल साम्राज्य की नींव पड़ चुकी थी। यह उत्तरी भारत का सबसे शक्तिशाली राज्य बन गया था।

2. हिन्दू धर्म में जटिलता :-

ऋग्वैदिक काल में आर्यों का धर्म तो सरल था। परंतु कालांतर में वैदिक कालांतर में वैदिक धर्म का स्वरूप जटिल हो गया था।

3.) बहुदेववाद :- छठी शताब्दी ई. पू. तक धर्म में अनेक देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा स्थापित हो चुकी थी। सृष्टि की सभी शक्तियों, राजा, रानियों तथा शूरवीरों को देवता माना जाने लगा था। इन देवताओं को प्रसन्न करने के लिए अनेक प्रकार के यज्ञ, हवन, जप-तप आदि भी आयोजित किए जाते थे।

5. यज्ञ एवं कर्मकाण्ड :—

वैदिक काल में आर्यों का धर्म सरल एवं आडम्बरहीन था। लोग अपने यज्ञ व अनुष्ठान स्वयं कर लेते थे। पुरोहित की कोई आवश्यकता नहीं थी परन्तु यज्ञों एवं कर्मकाण्डों की प्रधानता बढ़ने से पुरोहितों का महत्व भी बढ़ा।

6. आर्थिक उन्नति :—

गंगा घाटी के लिए यह काल लगभग क्रांति का काल था। उत्तर प्रदेश के अतरंजीखेड़ा की खुदाई से यह सिद्ध हो गया यहां के किसान लगभग 1000 ई. पू. में लोहे का प्रयोग करने लगे थे।

Q.1. गुप्तकालीन समाज पर लिखिए।

Ans:- गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था :—

गुप्तकाल में अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए तथा एक मजबूत आर्थिक ढांचे का निर्माण हुआ। कृषि, उद्योग एवं व्यापार का इस काल में अत्यधिक विकास हुआ। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि इस काल में भूमि अनुदान की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण सामन्तवाद का उदय हुआ जिसके परिणामस्वरूप कृषि व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए।

1. कृषि व्यवस्था।

Scanned with OKEN Scanner

Page :
Date :

2. भू-राजस्व व्यवस्था ।

3. व्यापार ।

4. नगरीकरण ।

1. कृषि व्यवस्था :- कृषि प्रधान देश के होने के कारण भारत की आर्थिक दशा की रीढ़ हमेशा कृषि रही है। गुप्त शासकों ने भी अन्य भागों की तरह कृषि के विकास की तरफ समुचित ध्यान दिया।

(i) भूमि की किस्में :- विशेषताओं के आधार पर अमरकोश में बारह प्रकार की भूमियों का उल्लेख मिलता है।

Page
Date

क्षेत्र :- जिस भूमि पर खेती की जा सकती है।

वास्तु :- जिस जमीन पर मकान बनाए जाते थे।

चरागाह भूमि :- वह भूमि जहाँ पशु चरते थे।

खिल :- वह भूमि जिस पर खेती नहीं होती।

अप्रहत :- बिना जोती जंगल की भूमि अप्रहत कहलाती थी।

(ii) भूमि जोतने की विधि :- गुप्तकाल में कृषि परंपरागत तरीके से होती थी। भूमि हल-बैल से जोती जाती थी।

(iii) **प्रमुख फसलें :—** वराहमिहिर ने गुप्तकाल में बोयी जाने वाली तीन प्रकार की फसलों का विवरण दिया है - रबी, खरीफ (पतझड़) और साधारण समय में होने वाली अमरकोश में भी गुप्तकाल में पैदा होने वाली फसलों के नाम मिलते हैं — गेहूं, धान, ज्वार, ईख, बाजरा, मटर, सरसों, अलसी, अदरक, काली मिर्च आदि।

(iv) **सिंचाई व्यवस्था :—** गुप्त शासकों ने अपने उस कर्तव्य का पालन किया था जो प्राचीन ग्रंथ में था।

Q.10. भारतीय सामन्तवाद की उत्पत्ति एवं विकास का वर्णन कीजिए।

Ans! मैक्स वेबर सामन्तवाद को पितृसत्तात्मक व्यवस्था का एक प्रकार मानते थे। इसकी विशेषताएं है सत्ता में भागीदारी की इस सीमा तक कमी कि यह सम्मानित माना जाने लगता है कि आसामी स्वेच्छा से अपनी निष्ठा को शपथों के प्रति वफादार रहेंगे राजनीतिक समिति समूह के स्थान पर सामन्तों की एक ऐसी व्यवस्था आ जाती है जो सामन्तों और उनके अनुसामियों के बीच और असामियों तथा उनके सेवकों के बीच पूरी तरह व्यक्तिगत वफादारी पर आधारित होती है।

काल :-

सामन्तवाद पूरे इतिहास के दौरान पूरी सीमा पर एक साथ कभी भी काबिज नहीं रहा यह किसी खास काल और खास इलाकों में जहां उत्पादन के खास तरीके और संगठन मौजूद थे, सामाजिक आर्थिक संगठन का एक खास रूप था।

स्वरूप :-

यूरोपीय सामन्तवाद के स्वरूप का राजनीतिक और प्रशासनिक ढांचा भूमि-अनुदानों के आधार पर गठित था। और असली आर्थिक ढांचा कृषि-दासत्व प्रथा के आधार पर।

विकास :-

भारत में सामन्तवाद के उद्भव और विकास का इतिहास ईस्वी सन् की पहली शताब्दी में ब्राह्मणों को दिए जाने वाले भूमि अनुदानों से संबंधित है। ऐसा भी ज्ञात होता है कि कुछ राजनीतिक एवं प्रशासनिक प्रणालियों के कारण मौर्योत्तर काल और विशेषकर गुप्तकाल से राज्यव्यवस्था सामन्तवादी ढांचे में ढलने लगी।

सामन्तों के अधिकार :-

(1) सैद्धान्तिक रूप से भूमि का स्वामी को कुछ अधिकार भी प्रदान करते थे।

Scanned with OKEN Scanner

Page :
Date :

सामन्तों के कर्तव्य :—

(i) सामन्तों को भूमि इस कर्तव्य के साथ दी जाती थी।

(ii) अपनी सेना का खर्च भी सामन्तों को स्वयं ही उठाना पड़ता था।

गुण :—

(i) शान्ति एवं सुव्यवस्था तथा सुरक्षा का दायित्व सामन्तों के कंधों पर ही था।